International Journal of Applied Research 2017; 3(5): 104-106

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(5): 104-106
www.allresearchjournal.com
Received: 15-03-2017
Accepted: 16-04-2017

यत्लेश यादव
शोधछात्रा, इतिहास विभाग,
डॉ. भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश
भारत

Correspondence
यत्लेश यादव
शोधछात्रा, इतिहास विभाग,
डॉ. भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश
भारत

मध्य एवं दक्षिणी उत्तर प्रदेश की डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं का ऐतिहासिक अध्ययन

यत्लेश यादव

प्रस्तावना

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती का देहावसान होने के अनन्तर उनके समर्थकों ने उनकी याद में भव्य स्मारक बनाने का निर्णय किया, जिससे स्वामी दयानन्द सरस्वती के अधूरे कार्य पूर्ण किये जा सकें। अन्ततः निर्णय हुआ देश के अज्ञान को दूर करने के लिए शिक्षण संस्थाओं का गठन किया जाये। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए सर्वप्रथम लाहौर में 1 जून, 1886 को डी.ए.वी. शिक्षण संस्था खोली गई। इसके अनन्तर पूरे देश में इनके समर्थकों ने इस कार्य को युद्ध स्तर पर करने का बीड़ा उठा लिया। अतः इस पुनीत कार्य में उत्तर प्रदेश भी अग्रण्य रहा। मध्य एवं दक्षिणी उत्तर प्रदेश में इनका उदय हुआ जिनका वर्णन इस प्रकार है –

डी.ए.वी. स्कूल बिसौली, बदायूँ [1]

आर्य समाज द्वारा स्थापित यह प्राथमिक विद्यालय 'ज्ञानदेवी आर्यविद्या मन्दिर' के नाम से चल रहा है। यह वर्तमान में बदायूँ जनपद की तहसील बिसौली में स्थित है। इस विद्यालय की स्थापना 1980 ई. में की गई थी। जिस समिति के नाम इसका पंजीकरण हुआ था उसका नाम 'वंशीधर शिक्षा समिति आर्यसमाज बिसौली' रखा गया था। इस समिति का रजिस्ट्रेशन क्रमांक 137/8687 है। इसकी स्थापना में श्री कविन्द्रनाथ ही सक्सेना, सुरेश कुमार जी भट्टेवाले एवं श्री त्रिभुवन जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। [2] ये सभी इस संस्था के संस्थापक, अध्यक्ष एवं कमेटी के सदस्य रहे थे। वर्तमान में यह 'जूनियर हाई स्कूल' के रूप में चल रहा है। इसमें बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा दी जा रही है, जो कि सहशिक्षा के अन्तर्गत है। जिस समय इस विद्यालय की स्थापना हुई थी, उस समय छात्र संख्या 100 के लगभग थी, आज यह सख्या 600 के लगभग है। इसमें गाँव तथा शहर दोनों ही स्थानों से बच्चे पढ़ने आते हैं। वर्तमान में इसमें 18 शिक्षण कक्ष हैं तथा पन्द्रह शिक्षक हैं, विद्यालय में दो कर्मचारी एवं एक लिपिक है, कम्प्यूटर नहीं है। पुस्तकालय तथा वाचनालय भी है। विद्यालय में एक खेल का मैदान एवं फुलवारी भी मनमोहक है। वर्तमान में प्रबन्धक श्री के.एम.जी. सक्सेना हैं, जिनके सराहनीय योगदान से आज विद्यालय चल रहा है। वर्तमान विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री पुनीतबाबू अग्रवाल एवं प्रधान लिपिक श्री नीरज रस्तोगी जी हैं। इन्हीं के महत्त्वपूर्ण योगदान से विद्यालय सही स्थिति में चल रहा है।

डी.ए.वी. इंटर कॉलिज, बरेली [3]

'डी.ए.वी. कालीचरन उ.मा. विद्यालय बरेली' की स्थापना 1940 ई. में हुई थी। जिस समिति के नाम इसका सर्वप्रथम पंजीकरण हुआ था, उसका नाम 'डी.ए.वी. एजुकेशन कमेटी जिला बरेली था। जिसकी स्थापना में स्व. श्रीकृष्ण बिहारीलाल जौहरी, स्व. ब्रजबिहारीलाल जी' एवं स्व. आनन्दबिहारीलाल जी का महत्त्वपूर्ण व सराहनीय योगदान रहा है। [4] इसे हाई स्कूल की मान्यता 1950 ई. में, जब भारत का संविधान लागू हुआ था

तब मिली थी, तथा ठीक सात साल बाद 1957 ई. में 'इंटरमीडिएट' की मान्यता प्राप्त हुई थी। यह सहशिक्षा की संस्था है। इसकी प्रबन्धकारिणी एकल है तथा यह शहरी क्षेत्र में स्थित है। स्थापना के समय इसकी छात्र संख्या-500 छात्रों के लगभग थी, परन्तु वर्तमान समय में यह संख्या घटकर केवल 200 छात्र ही रह गई है। इसका कारण वर्तमान शिक्षा के स्तर का निरन्तर गिरते जाना है। इस विद्यालय में विज्ञान वर्ग, कला वर्ग, वाणिज्य वर्ग एवं सिलाई-कढ़ाई की शिक्षा दी जाती है। विद्यालय का कुल क्षेत्रफल लगभग 1 एकड़ भूमि में है। इसमें कुल 16 शिक्षण कक्ष हैं तथा प्रधानाचार्य कक्ष और कार्यालय कक्ष पृथक्-पृथक् हैं। पुस्तकालय और वाचनालय भी यहाँ व्यवस्थित हैं, तथा कम्प्यूटरों से परिपूर्ण है। विद्यालय का वातावरण प्रकृति एवं मनोहारी है। इस कॉलेज में खेल का बड़ा मैदान भी है। सम्प्रति यहाँ वर्तमान शिक्षा प्रणाली को देखते हुए जितनी कम्प्यूटर (संगणक) सुविधा होनी चाहिए वह है क्योंकि अब शिक्षा कम्प्यूटरीकृत हो गई है। आर्य समाज द्वारा संचालित जितने भी विद्यालय हैं, आज उनकी स्थिति दयनीय होती जा रही है। प्राय: सभी विद्यालयों की जितनी भी प्रबन्धकारिणी समितियाँ हैं। वे सभी विवादग्रस्त हैं। [5] परन्तु इसकी स्थिति कुछ हद तक सही है। वर्तमान समय में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान् शान्ति कुमार जी तिवारी एवं कार्यालयाध्यक्ष श्रीमान् मनोज कुमार पाण्डेय हैं।

स्वामी दयानन्द डिग्री कॉलिज, मीरगंज, बरेली [6]

आर्यसमाज द्वारा स्थापित यह संस्था स्वामी दयानन्द डिग्री कॉलिज, मीरगंज, बरेली में स्थित है। इस कॉलिज की स्थापना सन् 2009 में हुई थी। इस महाविद्यालय की स्थापना में श्री चिन्तामणि जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, क्योंकि इसकी नींव उन्हीं के शुभ हाथों से रखी गई थी। [7] इस महाविद्यालय की स्थापना में कमेटी के अनेक सदस्यों का भी योगदान है, क्योंकि एक व्यक्ति इतनी बड़ी संस्था का निर्माण कैसे कर सकता है? डिग्री कॉलिज की मान्यता मिलने से पहले 2000 ई. में 'हाईस्कूल' तथा 2003 ई. में 'इंटरमीडिएट' की मान्यता उ.प्र. सरकार द्वारा प्रात हुई थी। इस प्रकार यह महाविद्यालय धीरे-धीरे प्रगति करने से और कमेटी के कई महत्त्वपूर्ण सदस्यों के योगदान से आज डिग्री कॉलेज बन गया है। उत्तर प्रदेश सरकार के मानक के अनुसार महाविद्यालय की भूमि लगभग 5 एकड़ है। इस डिग्री कॉलेज में शिक्षणकार्य के लिए 25 कमरे हैं, जिनमें छात्रों के सही बैठने की व्यवस्था है। डिग्री कॉलेज की स्थापना के समय लगभग 300 छात्र-छात्राएँ थे, परन्तु आज वर्तमान में 500 के लगभग हैं। यह महाविद्यालय शहर में स्थित है और इसमें सहशिक्षा दी जा रही है। किसी भी छात्र-छात्रा के साथ जाति-पाँति का कोई भी भेदभाव नहीं किया जा रहा है। इस डिग्री कॉलेज में केवल विज्ञानवर्ग की ही शिक्षा दी जा रही है। यहाँ पर भौतिकविज्ञान, रसायनविज्ञान एवं जीवविज्ञान की प्रयोगशालाएँ भी हैं। जो महाविद्यालय तथा छात्रों की गुणवत्ता में चार-चाँद लगा रही है। महाविद्यालय में दो पुस्तकालय एवं वाचनालय भी हैं, जिनमें पुस्तकें पढ़ने की व्यवस्था है, पत्र-पत्रिकाएँ भी पढ़ने को मिलती हैं, जिनसे हमें प्रतिदिन देश-प्रदेश की जानकारियाँ मिलती रहती हैं। डिग्री कॉलेज में शिक्षण कार्य के लिए वर्तमान में 11 शिक्षक एवं 1 प्राचार्य है। इस कॉलेज में प्राचार्यकक्ष, कार्यालयकक्ष, कम्प्यूटरकक्ष सभी की व्यवस्था है। विद्यालय में शारीरिक खेलकूद के लिए एक खेल का मैदान है। महाविद्यालय के निदेशक श्री पंकज गंगवार हैं, तथा वर्तमान सचिव डॉ. सत्यवीरसिंह जी गंगवार हैं जो कि कॉलेज के महत्त्वपूर्ण कार्यों में भाग लेते हैं। आज यह कॉलेज इन्हीं के योगदान से सर्वोच्च चरमोत्कर्ष पर है। कॉलेज के वर्तमान प्राचार्य श्री सी.एम.जी. गंगवार हैं जो कि इसकी व्यवस्था को चाक-चौबन्द बनाये रखे हैं। महाविद्यालय में शिक्षा की अच्छी व्यवस्था होने से निरंतर प्रगति कर रहा है। इस महाविद्यालय का वातावरण शुद्ध एवं मनमोहक है। इसमें पेड़-पौधों की अच्छी व्यवस्था है। अत: चारों ओर का वातावरण हरा-भरा दिखाई देता है, पानी की व्यवस्था के लिए हैण्डपम्प, समरसेबिल लगाए गए हैं। छात्रों के लिए एन.सी.सी. तथा एन.एस.एस. की भी व्यवस्था है वर्तमान शिक्षा प्रणाली कम्प्यूटर पर आधारित हो गई है। अत: कॉलेज में कम्प्यूटरों (संगणक) का भी उत्तम व्यवस्था की गई है। यह संस्था अपने भूतकाल से लेकर वर्तमान काल तक निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है।

डी.ए.वी. इंटर कॉलेज, अलीगढ़ [8]

आर्यसमाज द्वारा संचालित इस विद्यालय की स्थापना 1903 ई. में मौ. मालीपाड़ा में की गई थी। यह वर्ष 1908 ई. में अपनी वर्तमान भूमि पर स्थापित हुआ। यह विद्यालय सन् 1914 में जूनियर हाईस्कूल बना तथा कला एवं विज्ञान ने इसे 1939 ई. में तथा कृषिवर्ग में इसे हाईस्कूल की मान्यता 1946 ई. में मिली थी। इसी प्रकार 1948 ई. में इंटर साहित्य वर्ग, 1952 ई. में विज्ञान वर्ग एवं 1954 में कृषि वर्ग की मान्यता मिली। [9] इससे स्पष्ट है कि जी.टी. रोड पर स्थित 'डी.ए.वी. इंटर कॉलेज' (दयानन्द ऐंग्लो वैदिक पाठशाला) ने इस जनपद की समय-समय पर प्रखर प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्वों का निर्माण करके समाज एवं शिक्षा में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया है, इसमें बालिकाओं को ही शिक्षा दी जाती है।

सन् 1903 ई. में डी.ए.वी. पाठशाला के रूप में इस विद्यालय ने अपने सौ वर्ष के यशस्वी शिक्षण-सेवाकाल को पूरा किया है। विद्यालय में जनपद से ही नहीं, बल्कि समीप दूरस्थ ग्रामीण अंचल से भी विद्यार्थी यहाँ आकर शिक्षा ग्रहण करते हैं। विद्यालय प्रबन्ध समिति विद्यालय को आधुनिकतम सुसज्जित विद्यालय बनाने को निरन्तर प्रयत्नशील है, विद्यालय के प्रबन्धक श्री सतीशचन्द्र भईया जी के कुशल प्रबन्ध निदेशन में प्रबन्धक समिति के सहयोग, आत्मीयता और लगनशीलता से यह विद्यालय उत्थान की ओर अग्रसर है। विद्यालय में लगातार भवन का जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण जारी है। विद्यालय की स्थापना के समय छात्र संख्या मात्र 60 थी। वर्तमान समय में 650 छात्र संख्या है। प्रबन्धक खेलकुमार गुप्ता, अध्यक्ष, दिनेशचन्द्र वार्ष्णेय हैं। [10] विद्यालय के पास पर्याप्त कक्षाकक्ष एवं प्रशासनिक कक्ष तथा प्रयोगशालाएँ सुसज्जित हैं। पत्र-पत्रिकाएँ एवं समाचार पत्रों की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान समय में शिक्षण कक्ष 14 तथा शिक्षक 15 अध्यापन कार्य करा रहे हैं, तथा विद्यालय के पास पर्याप्त पानी की उत्तम व्यवस्था एवं खेल का पर्याप्त मैदान

उपलब्ध है। विद्यालय में पीने और बागवानी की सिंचाई करने के लिए समरशेविल की व्यवस्था है। नगर के दानवीर लोगों ने मुक्तहस्त से दान देकर नगर की प्राचीनतम संस्था के जीर्णोद्धार एवं चहुँमुखी विकास के लिए महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय योगदान देने की कृपा की है। प्रबन्ध समिति, प्रधानाचार्य, शिक्षक, लिपिक, कर्मचारी, छात्र, अभिभावकगण सभी के पारिवारिक सेवा सहयोग की भावना से संस्था बहुमुखी विकास एवं प्रगति के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील है। वर्तमान में एक कार्यालय कक्ष तथा 14 लिपिक, 10 कर्मचारी एवं 1 कम्प्यूटर कक्ष उपलब्ध है। इस विद्यालय की नवनिर्वाचित प्रबन्ध समिति के द्वारा कार्यभार ग्रहण करते ही विद्यालय की ध्वस्त पड़ी व्यवस्थाओं का जीर्णोद्धार कराया गया है विद्यालय के समरसेबिल पम्प की मरम्मत कराकर, तथा उसे चालू कराकर विद्यालय की बागवानी आदि को पुनः हरी-भरी अवस्था में लाया गया है। यहाँ का वातावरण मनमोहर एवं सुरम्य है। अभिभावक, अध्यापक ऐसोशियेशन, विनियमावली 1986 ई. के प्रावधानानुसार अन्य विद्यालयों की भाँति अध्यापकों एवं अभिभावकों के बीच सम्पर्क बनाने तथा विद्यालय-विकास की योजनाओं से समाज को जोड़ने के लिए अध्यापक-अभिभावक संघ का गठन प्रत्येक वर्ष किया जाता है। अभिभावकों के सहयोग से जो धनराशि प्राप्त होती है, उसका उपयोग विद्यालय-भवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।

जिन शिक्षण संस्थाओं का उल्लेख किया है उनके अतिरिक्त ग्रन्थ भी अनेक डी.ए.वी. हायर सैकेण्डरी स्कूल एवं इंटर कॉलेज वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश में विद्यमान है [11]- डी.ए.वी. हायर सैकेण्डरी स्कूल प्रतापगढ़, डी.ए.वी. इंटर कॉलेज विंगदी (फतेहपुर), डी.ए.वी. इंटर कॉलेज, रजलामई (फर्रुखाबाद), डी.ए.वी. इंटर कॉलेज मेहदावल (वस्ती), डीए.वी. स्कूल (मैनपुरी), डी.ए.वी. कन्या विद्यालय विलासपुर (रामपुर), डी.ए.वी. इंटर कॉलेज पौढ़ी (गढ़वाल), डी.ए.वी. इंटर कॉलिज फैजाबाद, डी.ए.वी. इंटर कॉलिज कर्णपुर (देहरादून), डी.ए.वी. स्कूल सरोऊ (एटा), डी.ए.वी. स्कूल गोण्डा, डी.ए.वी. स्कूल आर्यनगर रेवाड़ी (गोण्डा), डी.ए.वी. स्कूल बाँदा, डी.ए.वी. विद्यालय सामली (मुजफ्फरनगर), डी.ए.वी. आदर्श पाठशाला नुकड़ (सहारनपुर) और डी.ए.वी. कृषि विद्यालय लखान (मुजफ्फरनगर)।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, स्थानीय आर्य समाजों तथा स्थानीय विद्या सभाओं द्वारा संचालित इतनी डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं की सत्ता ये सूचित करने के लिए पर्याप्त है कि डी.ए.वी. कॉलिज आन्दोलन में उत्तर प्रदेश को कितना प्रभावित किया था। [12] उत्तर प्रदेश में कितनी ही ऐसी आर्य शिक्षण संस्थाएँ हैं जिनके साथ दयानन्द एवं आर्य जैसे नामों व विशेषणों का प्रयोग हुआ है। इनमें और डी.ए.वी. संस्थाओं में कोई मौलिक भेद नहीं है। पंजाब में आर्यसमाज किस प्रकार दो दलों या वर्गों में विभक्त हो गया था, [13] वैसा उत्तर प्रदेश एवं अन्यत्र नहीं हुआ। यही कारण है कि जो आर्यप्रतिनिधि सभा कतिपय गुरुकुलों का संचालन करती हैं। [14] उसी के द्वारा अनेक डी.ए.वी. संस्थाओं तथा अन्य दयानन्द व आर्य स्कूलों तथा कॉलिजों का भी संचालन किया जाता है। [15]

शोध सन्दर्भ

1. इस संस्था का यह विवरण संस्थाधिकारियों के साक्षात्कार पर आधृत है।
2. इस कथन का उपजीव्य उक्त साक्षात्कार ही है।
3. यह विवरण भी इस संस्था के अधिकारियों के साक्षात्कार के अनुसार ही है।
4. इस कथन में उक्त इंटर कॉलिज के कार्यालय से मिली जानकारी ही प्रमाण है।
5. शोधछात्रा ने विभिन्न स्थानों पर स्थित डी.ए.वी. संस्थाओं के अधिकारियों से बात करके यही अनुभव किया है।
6. यह विवरण भी इस कॉलिज के कार्यालय द्वारा प्रदान की गयी मौखिक सूचना के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।
7. ये दोनों नाम साक्षात्कार के मध्य उभरकर आये हैं।
8. यह विवरण भी इस संस्था के प्रधानाचार्य के साक्षात्कार के आधार पर दिया जा रहा है।
9. यह आवश्यक तथ्यजात इस विद्यालय के कार्यालय से उपलब्ध हुए हैं।
10. इस विवरण का आधार भी उक्त साक्षात्कार ही है।
11. शोधछात्र के भरसक प्रयत्न करने के बाद भी इन संस्थाओं के कार्यालयों एवं प्रधानाध्यापकों, प्रधानाचार्यों ने कोई भी विवरण शोधछात्रा को नहीं दिये।
12. द्र. - आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश-लखनऊ का इतिहास, पृ. 95.
13. पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा, डी.ए.वी. पार्टी और 'गुरुकुल पार्टी' के रूप में दो भागों में बँट गयी थी।
14. गुरुकुल-वृन्दावन, कन्या गुरुकुल सासनी एवं डी.ए.वी. कॉलिज लखनऊ जैसी संस्थाएँ 'आर्य प्रतिनिधि सभा' लखनऊ-उत्तर प्रदेश के निर्देशन में चल रही हैं।
15. 'आर्य प्रतिनिधि सभा' लखनऊ के द्वारा नियुक्त अधिकारी ही इन संस्थाओं का संचालन करते हैं।